[Shri K. Lakkappa]

Wih the growth of industries, our cities and major town are subjected to air pollution as well caused by toxic pollutants emitted by industries and by moving vehicles. There have been recent reports about a high degree of contamination from industrial wastes in the wazirpur area of Delhi and Pollution of surroundings due to the waste material emanating from the Nuclear Fuel Complex in Hyderabad. Similar are the reports of pollution of the air extending over several kilometers by black graphite dust emitted by the factory of Graphite India Ltd, siuated near Bangalore.

This problem is a national problem and requires to be tackled on a warfooting. The States which have not yet adopted the Water (Prevention and Control of) Pollution Act are to be persuaded to adopt them soon and joint efforts have to be made by the Centre and the States in the direction of prevention. Control and abatement of water and atmosphere pollution. The schemes are to be drawn up and implemented quickly for the disposal of sewage in the major towns where such facilities do not exist now. If necessary, Ordinance or legislation may be adopted.

(IV) DETERIORATING ECONOMIC CONDITION OF HANDLOOM WEAVERS OF UTTAR PRADESH.

श्री जैनुल बशर (गाजीपुर): उपाध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश में बुनकर इस समय गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं । गरीब बुनकरों के माल की बिक्री नहीं हो पा रही है और दूसरी तरफ बैंकों से वर्षों पहले लिए गए कर्जों की वसूली काफी तेज हो गई है ।

गरीब बुनकरों की जीविका का प्रमुख साधन जनता धोती "साड़ी" बनाना था जिसे उत्तर प्रदेश हैंडलूम कारपोरेशन खरीदता रहा है । इस समय उत्तरप्रदेश हैंडलूम कारपोरेशन ने जनता धोती "साड़ी" खरीद प्रायः बंद कर दी है । इससे लाखों की संख्या में बुनकरों के करघे बंद हो गए हैं ।

पिछले दिनों मैंने गाजीपुर और आजमगढ़ में बुनकर आबादियों का दौरा किया था । वहां मुझे आजमगढ़ के मऊ, कोपागंज तथा गाजीपुर के बहादुरगंज और जंगीपुर में बुनकरों ने काफी संख्या में मुझे बताया था कि हैंडलूम कारपोरेशन के खरीद सेंटर बंद पड़े हैं । इसके अलावा 3-4 महीने से बुनकरों का पैसा हैंडलूम कारपोरेशन द्वारा बुनकरों को नहीं दिया गया है । यही दशा प्रायः उत्तर प्रदेश में सभी स्थानों की है । यदि शीघ्रातिशीघ्र उत्तर प्रदेश हैंडलूम कारपोरेशन बड़ी संख्या में बुनकरों द्वारा तैयार जनता धोती "साड़ी" की खरीद नहीं करता तो बुनकर भुखमरी के कगार पर खड़े हो जाएंगे ।

उत्तर प्रदेश हैंडलूम कारपोरेशन की यह भी आम शिकायत है कि वह गरीब बुनकरों से जनता धोती "साड़ी" की खरीद न करके बिचौलियों से थोक में खरीद करता है । एक-एक आदमी से 4-4, 5-5, 6-6 हजार धोती साड़ियां खरीदी जाती हैं और दूसरी तरफ करघे के पीछे काम करने वाला बुनकर तैयार साड़ियों की बिक्री के लिए मारा-मारा फिरता है ।

कुछ वर्षों पहले बुनकरों ने बैंकों से कर्जे ले रखे थे । बुनकरों को अपना काम शुरू करने में जितने कर्जे की आवश्यकता थी, उसमें केवल 1/3 पूंजी कर्जे के रूप में दी गई थी । इन कर्जों को लेने के लिए भी बुनकरों को अवैध रुपए खर्च करने पड़े थे। नतीजा यह हुआ कि इस कर्जे से वे कोई काम शुरू नहीं कर सके और कर्जे अदा नहीं हुए । इस समय बड़ी संख्या में बुनकरों पर कर्जे का बोझ चढ़ा हुआ है । इनमें से अधिकतर बुनकर बैंकों का कर्जा चुकाने में सर्वदा असमर्थ हैं । सरकार को कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए जिससे बुनकरों को इन कर्जों से मुक्ति मिल सके और वे फिर से अपने पैरों पर खड़े किए जा सकें।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह शीघ्रातिशीघ्र उत्तरप्रदेश के बुनकरों की गिरती आर्थिक दशा की तरफ ध्यान दे और ऐसी कार्यवाही करे जिससे उनके तैयार माल की खरीद की व्यापक व्यवस्था हो तथा उन्हें कर्जों से मुक्ति दिलाने का कोई रास्ता निकल सके ।